डॉ० संगीता सिंह
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

भाषाओं का वर्गीकरण :—

भाषाओं के वर्गीकरण के अनेक आधार है यथा - महाद्वीप, देश धर्म, काल, भाषाओं की आकृति, परिवार प्रभाव आदि। परन्तु इनमें से आकृति एवं इतिहास को आधार बनाकर जो वर्गीकरण किया गया है वह अत्यधिक तर्कसंगत है।

आकृतिमूलक वर्गीकरण (Morphological Orsyntactical Classification) :—

शब्दों या पदों की रचना के आधार पर जो वर्गीकरण किया जाता है, वह आकृतिमूलक वर्गीकरण कहा जाता है। इसे रूपात्मक, पदात्मक, वाक्यात्मक, व्याकरणिक या रचनात्मक वर्गीकरण भी कहा जाता है। किसी भी शब्द के निर्माण मे, मुख्यतः अर्थतत्व तथा सम्बन्ध तत्व की भूमिका होती है तथा कभी-कभी तृतीया तत्व-उपसर्ग भी शब्द के निर्माण में सहायक होती है। यथा - कृष्णः गच्छति में कृष्ण- और गच्छ- अर्थतत्व है तथा सः एवं 'ति' सम्बन्ध तत्व है। ये सम्बन्धतत्व रूपतत्व भी कहे जाते है। अतः इस रूप तत्व के कारण इसको रूपात्मक वर्गीकरण भी कहा जाता है। इसको निम्न प्रकार से समझा जा सकता है —

उपसर्ग (द्योतक) + प्रकृति (अर्थतत्व) + प्रत्यय (सम्बन्धतत्व) =
शब्द = पद

भाषाओं के आकृतिमूलक वर्गीकरण के परिप्रेक्ष्य में श्लेगल का नाम विशेष महत्व रखता है, क्योंकि उन्होंने ही आकृतिमूलक भाषाओं को दो वर्गों में विभक्त किया, जिसे बॉप ने तीन वर्गों में तथा 'पाट' ने चार वर्गों में विभाजित किया है। आकृतिमूलक वर्गीकरण के आधार पर भाषाओं को दो वर्गों में विभक्त किया गया है —

I) अयोगात्मक भाषाएँ (Isolating Language).
II) योगात्मक भाषाएँ (Agglutinating)

I) अयोगात्मक भाषाएँ — इस वर्ग की भाषा को व्यासप्रधान निरवयव आदि नाम से भी जाना जाता है। इस वर्ग की भाषाओं में प्रत्येक वर्ण शब्द का स्वतन्त्र अस्तित्व और महत्व होता है। उसमें प्रकृति एवं प्रत्यय का योग नहीं होता है। स्वर के अनुसार अर्थ निर्णय किया जाता है। इन भाषाओं की शब्द-रचना अत्यधिक सरल होती है। इस वर्ग की भाषाओं में चीन, तिब्बत, बर्मा, थाइलैण्ड आदि देशों की भाषाएँ आती हैं।

वाक्य में उद्देश्य और विधेय आदि का सम्बन्ध स्थान और स्वर के द्वारा प्रकट होता है। ऐसी वाक्य रचना में प्रकृति और प्रत्यय का भेद नहीं रहता है जिस कारण वहाँ रचना, काल और कारक का सर्वथा अभाव रहता है।

अयोगात्मक वर्ग की भाषाओं में स्थान निपात तथा सुर का विशिष्ट महत्व होता है। इन भाषाओं का व्याकरण इन्हीं का विवेचन करता है। यद्यपि सामान्य रूप से इस वर्ग की सभी भाषाओं में इनका महत्व है, तथापि कुछ भाषाओं में इनमें से

किसी एक का महत्व अपेक्षाकृत अधिक होता है। यथा - चीनी भाषा में स्थान तथा सुर का, सूडान भाषा में स्थान का स्वामी भाषा में सुर का तथा बर्मी-तिब्बती में निपात का विशेष महत्व है।

ii) योगात्मक सावयव भाषा — योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय के योग से शब्दों की रचना होती है। इन भाषाओं का प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है। विश्व में सर्वाधिक भाषाएँ इसी वर्ग की है। इन वर्ग की भाषाओं का निर्माण अर्थ-तत्व एवं सम्बन्ध तत्व के योग से होता है। प्रत्येक शब्द प्रकृति रूप न होकर प्रकृति-प्रत्यय के संयोग का परिणाम होता है। यथा - संस्कृत में 'रामेण हतो बालिः' में 'राम' के साथ तृतीया के 'एन्' का तथा 'हन्' के साथ तः प्रत्यय का और 'बालि' के साथ 'अः' प्रत्यय का योग है।

योगात्मक भाषाओं को उनके प्रकृति-प्रत्यय के संयोग के आधार पर तीन वर्गों में बाँटा गया है—

i) अश्लिष्ट योगात्मक या प्रत्यय-प्रधान भाषाएँ
ii) श्लिष्ट योगात्मक या समास-प्रधान भाषाएँ
iii) श्लिष्ट योगात्मक या विभक्ति प्रधान भाषाएँ

—×—